६. मानस का हंस

– *अमृतलाल नागर*

मनपटल पर बीते दृश्य सजीव हो उठे। चार-पाँच वर्ष का नन्हा-सा बालक कंधे पर झोली लटकाए आँधी-पानी में बढ़ा चला जा रहा है। भागने का प्रयत्न करे तो फिसलने का भय लगता है और धीरे चले तो आँधी-पानी के तेज झोंके उसे डगमगा देते हैं। सहसा देर से कड़कड़ा रही बिजली बच्चे से दो-तीन सौ कदम दूर एक पेड़ पर गिरी। बच्चा भय के मारे दौड़ने लगता है और चार-पाँच कदम के बाद ही फिसलकर गिर पड़ता है। झोली का अन्न बिखर जाता है। बच्चा उठता है। हवा, पानी और कीचड़ उसे उठने नहीं दे रहे हैं। झोली की टोह लेता है, वह कुछ दूर पर छितरी पड़ी है। उसकी कड़ी मेहनत की कमाई, दिन भर की भूख का सहारा पानी में बहा जा रहा है। वह उठने की कोशिश में बार-बार फिसलता है। भीख में पाया हुआ आटा गीला और बहता हुआ देखकर वह रो पड़ता है। 'हाय-हाय-हाय' बिलखता हुआ फिर सरक-सरककर तेजी से अपनी झोली के पास जाता है और उसे उठाकर झटपट कंधे पर टाँगता है। कीचड़ सनी थैली से आटे का पानी चू-चूकर उसकी पसली पर बह रहा है। आकाश फिर गरजता है। सहमा बच्चा उठकर चलने के लिए खड़ा होने का प्रयत्न सावधानी से करता है और अपने-आपको घर की ओर बढ़ाने में सफल भी हो जाता है। घर बहुत दूर नहीं पर घर है कहाँ?

झोंपड़ियों के मानदंड से भी हीनतम आठ-दस छोटी-छोटी झोंपड़ियों की बस्ती के लिए यह तूफान प्रलय बनकर आया था। अधिकांश झोंपड़ियाँ या तो उड़ गई थीं या फिर ढही पड़ी थीं। भिखारियों के टोले में सभी अपने-अपने राजमहलों की रक्षा करने के लिए जूझ रहे थे। उन्हीं में से एक कोने पर बना पार्वती अम्मा का घास-फूस और ढाक के पत्तों का राजमहल भी ढह पड़ा था। बहुत से ढाक के पत्ते और गली हुई फूस टट्टर में से निकल चुकी थी। उसके बचे-खुचे भाग के नीचे पार्वती अम्मा कराह रही थीं। उनकी गृहस्थी के मटके, कुल्हड़ फूटे पड़े थे।

बच्चा 'अम्मा' कहकर झपटता है। टट्टर के नीचे दबी पड़ी हुई बुढ़िया का आगे निकला हुआ हाथ पकड़कर खींचने का निष्फल प्रयत्न करता हुआ रो उठता है। बुढ़िया ने कराहकर आँखें खोलीं, बुझे स्वर में कहा- ''किसी को बुलाय लाओ, तुमसे न उठेगी।''

बच्चा बस्ती भर में दौड़ता फिरा-''ए मंगलू काका, तनी हमारी अम्मा को निकाल देव। उनके ऊपर छप्पर गिर पड़ा है-ए भैंसिया की बहू,

परिचय

जन्म : १९१६, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यु : १९९०
परिचय : अमृतलाल नागर जी ने सहज, सरल, दृश्य के अनुकूल भाषा में लेखन कार्य किया है। आपने मुहावरों, लोकोक्तियों, विदेशी भाषा तथा देशज शब्दों का आवश्यकतानुसार प्रयोग भी अपनी रचनाओं में किया है। अतीत को वर्तमान से जोड़ने और प्रेरणा के स्रोत के रूप में प्रस्तुत करने का कार्य आपने बखूबी किया है।
प्रमुख कृतियाँ : 'मानस का हंस', 'बूँद और समुद्र', 'अमृत और विष', 'खंजन नयन' (उपन्यास), 'एटम बम', 'वाटिका' (कहानी संग्रह), 'युगावतार', 'नुक्कड पर' (नाटक), 'गदर के फूल' 'जिनके साथ जिया' (संस्मरण) 'नटखट चाची', 'बाल महाभारत' (बाल साहित्य), 'सेठ बाँकेमल', 'कृपया दायें चलिए' (व्यंग्य) आदि।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत अंश में अमृतलाल नागर जी ने रामबोला तुलसी दास के बचपन, गरीबी, मातृप्रेम, उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। एक पुत्र का अपनी माँ के प्रति समर्पण की भावना अनुरणीय है।

ए सलौनी काकी, ए झबुआ की आजी, ए फेंकवा भैया...'' परंतु न काका ने सुना, न भैया ने, न आजी ने । पूरी बस्ती इस प्रलय प्रकोप के कारण त्रस्त है। गोदी के बच्चे और अंधे-लँगड़े-लूले असहाय जन हर जगह रिरिया रहे हैं । बहुत-से भिखारी इस समय आसपास के गाँवों में अपनी कमाई करने गए हुए हैं । अत्यंत अशक्त जन ही पीछे छूट गए हैं । जैसे-तैसे करके वे अपने ही ऊपर पड़ी विपत्ति से निबट रहे हैं, फिर कौन-किसकी सुने ।

मूसलाधार पानी में भीगता, निराशा में डूबा हुआ रामबोला कुछ क्षणों तक स्तब्ध खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे अपनी गिरी हुई झोंपड़ी के पास आया। देखा, पार्वती अम्मा का हाथ वैसे ही बाहर निकला भीग रहा था । उनके मुँह और शरीर पर भीगते छप्पर का बोझ भी यथावत ही था । रामबोला की मनोपीड़ा कुछ कर गुजरने के लिए चंचल हो उठी । इधर-उधर सिर घुमाकर काम की वस्तु की खोज की । छप्पर का जो भाग फूस-पत्तेविहीन होकर पड़ा था, उसके एक सिरे पर बाँस का एक छोटा टुकड़ा बड़े बाँस से जुड़ा हुआ बँधा था । बालक को लगा कि यही काम का है... बाँस के इस टुकड़े को खींच लिया जाए फिर इससे अम्मा की देह पर पड़े हुए छप्पर को ऊँचा उठा दिया जाए जिससे कि अम्मा उसके नीचे सरककर पौढ़ें । उपाय सूझते ही काम चल पड़ा । बाँस का टुकड़ा खींचना शुरू किया तो टट्टर की पुरानी सुतली ही टूट गई । टूटने दो, अभी तो इस सिरे का छप्पर उठाना है । छप्पर के एक सिरे के नीचे बाँस का टुकड़ा अड़ाकर उसे उठाना आरंभ किया । छप्पर का कोना तो तनिक-सा ही उठ पाया पर जोर इतना लगा कि कीचड़ में पाँव फिसल गया । गिरा, फिर उठा,

अबकी बार घुटने टेककर बैठा और फिर बाँस अड़ाया । छप्पर कुछ उठा सही पर नन्हे हाथ बोझ न सँभाल पाए। बालक को अपनी पराजय तो खली ही पर अम्मा ऊपर का बोझ तनिक-सा उठकर फिर मुँह पर गिरने से जब कराहीं, तब उसे अनचाहे अपराध की तरह और भी खल गया । ताव में आकर, 'जै हनुमान स्वामी, जोर लगाओ' ललकारकर दूसरी बार छप्पर उठाने में रामबोला ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी । छप्पर लड़खड़ाया, पर उसे गिरने न दिया, और भी जोशीले हुंकारे भर-भरकर वह अंत में एक कोना उठाने में सफल हो ही गया । फिर दूसरे कोने को उठाने की चिंता पड़ी। 'इसे काहे से उठाएँ?' कोई मतलब की चीज दिखलाई न पड़ी । पड़ोसी के यहाँ कुछ खपच्चियाँ पड़ी थीं, एक बार मन हुआ कि उठा लाए पर कुछ ही देर में गाली, मार के भय से वह उत्साह उड़न छू हो गया । टहनी काम के योग्य सिद्ध न हुई । छप्पर के नीचे अम्मा की लठिया झाँकती नजर आई । उसे लपककर खींच लिया और उसके सहारे से किसी प्रकार दूसरा सिरा भी ऊँचा उठा ही लिया । दो-क्षणों तक अपने श्रम की सफलता को

बाढ़ के प्रकोप का परिणाम दर्शाने वाले समाचार सुनिए ।

साहसी बालकों के प्रेरक प्रसंगों का वाचन कीजिए ।

विजय पुलक भरे संतोष से निहारता रहा, फिर पार्वती अम्मा के सिरहाने की तरफ बढ़ा ।

भीगते हुए भी अम्मा निर्विकार मुद्रा में काठ-सी पड़ी थीं । उनके कान से मुँह सटाकर रामबोला ने जोर से कहा-''अम्मा, वैसी सरक जाओ तो भीजोगी नहीं ।''

''मोरि देह तो पाथर हुई गई है रे, कैसे सरकी?'' सुनकर रामबोला हताश हो गया । एक बार शिकायत भरा सिर उठाकर बरसते आकाश को देखा, फिर और कुछ न सूझा तो अम्मा से लिपटकर लेट गया । स्वयं भीगते हुए भी उसे यह संतोष था कि वह अपनी पालनहारी को वर्षा से बचा रहा है पर यह संतोष भी अधिक देर तक टिक न पाया । पार्वती अम्मा तब भी पानी से भीग रही थी ।

आकाश में बिजली की कौंधें बीच-बीच में लपक उठती थीं । बादलों की गड़गड़ाहट सुनकर रामबोला को लगा कि मानो चैनसिंह ठाकुर अपने हलवाहा को डाँट रहे हैं । रामबोला अनायास ही ताव में आ गया । उठा और फिर नये श्रम की साधना में लग गया । दूसरे छप्पर के ढीले पड़ गए अंजर-पंजर को कसने के लिए पास ही खलार में उगी लंबी घास-पतवार उखाड़ लाया । रामबोला ने भिखारी बस्ती के और लोगों को जैसे घास बँटकर रस्सी बनाते देखा था; वैसे ही बँटने लगा । जैसे-तैसे रस्सियाँ बँटी, जस-तस टट्टर बाँधा । अब जो उसकी आधी से अधिक उधड़ी हुई छावन पर ध्यान गया तो नन्हे मन के उत्साह को फिर काठ मार गया । घास-फूस, ज्यौनारों में जूठन के साथ-साथ बाहर फेंकी गई पत्तलों और चिथड़े-गुदड़ों से बनाई गई वह छोटी-सी छपरिया फिर से छाने के लिए वह सामान कहाँ से जुटाए ? हवा द्वारा उड़ाए हुए माल वह इस बरसात में कहाँ-कहाँ ढूँढ़ेगा । दैव आज प्रलय की बरखा करके ही दम लेंगे । हवा के मारे औरों के छप्पर भी पेंगें ले रहे हैं । अभी तक अपनी-अपनी छावनों को बचाने के लिए सभी तो तूफान से जूझ रहे हैं... 'तब हम अब का करी ? हमरौ पेट भुखान है । हम नान्हें से तो हैं हनुमान स्वामी ! अब तक थक गए भाई ! अब हम अपनी पार्वती अम्मा के लगे जायके पौढ़ैंगे । दैउ बरसै तो बरसा करै । हम क्या करै बजरंगबली, तुम्हीं बताओ । तुमसे बने भाई तो राम जी के दरबार में हमारी गुहार लगाय आओ, औ न बने तो तुमहूं अपनी अम्मा के लगे जायके पौढ़ौ ।'

रामबोला खिसियाना-सा होकर रेंगते हुए अपनी छपरिया में घुसा । उसने खींचकर पार्वती अम्मा का हाथ सीधा किया तो वे पीड़ा से कराह उठीं पर बड़ी देर से एक ही मुद्रा में पड़ी हुई जड़ बाँह सीधी हो गई । स्नायु कंपन हुआ, जिससे उनके शरीर का आधा भाग थोड़ी देर तक काँपता रहा ।

संभाषणीय

'विनाश और निर्माण प्रकृति के नियम हैं', विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए ।

बालक के लिए यह आश्चर्यजनक, भयदायक दृश्य तो अवश्य था पर उसे यह कंपित देह पहले की मृतवत देह की स्थिति से कहीं अधिक अच्छी भी लगी । बोल पड़ा ...

''पार्वती अम्मा ! पार्वती अम्मा !!''

''हाँ, बचवा ।'' पार्वती अम्मा का वेदना में बुझा स्वर सुनाई दिया ।

''हम तुमको आगे ढकेलेंगे । तुम एक बार जोर से कराहोगी तो जरूर, पर तुम्हारी ये जकड़ी देह खुल जाएगी । बरखा से तुम्हारा बचाव भी हुइ जायगा ।''

बुढ़िया माई 'ना-ना' कहती ही रहीं पर रामबोला ने उनकी बगल में लेटकर कोहनी से ढकेलना आरंभ कर दिया । 'जय हनुमान स्वामी' का नारा लगाकर दाँत भींच और सिर झटकाकर रामबोला ने अपनी पूरी-पूरी शक्ति लगा दी । पार्वती अम्मा कराहती हुई पीछे गई । बालक अपनी जीत से खुश हुआ । गौर से देखा पर इस बार पार्वती अम्मा के किसी भी अंग में कंपन न हुआ । उन्हें खाँसी अवश्य आई और वे देर तक 'राम-राम' शब्द में कराहती रहीं, बस । परंतु अब वे भीग तो नहीं रही हैं । बरसात झेलने के लिए रामबोला की पीठ है । खाँसती-कराहती अम्मा की पीठ सहलाते हुए, विजयी पूत ने इठलाते स्वर में ऐसे चुमकार भरे अंदाज से पूछा कि मानो बड़ा छोटे-से पूछ रहा हो- ''पार्वती अम्मा, बहुत पिराता है ?''

''चुपाय रहौ बच्चा, राम-राम जपौ ।''

''राम-राम...''

— o —

बढ़ता हुआ प्रदूषण और उसकी रोकथाम के लिए किए जाने वाले उपाय लिखिए ।

शब्द संसार

मानदंड पुं. सं.(सं.) = मूल्यांकन की विधि
निष्फल वि.(सं.) = जिसका कुछ फल न हो
रिरियाना क्रि.(दे.) = गिड़गिड़ाना
निर्विकार वि.(सं.) = विकाररहित
कौंध स्त्री.सं.(हिं.) = बिजली की चमक
खलार वि. पुं. (दे.) = नीचा, गहरा, नीची
ज्यौनार स्त्री.सं.(सं.)=भोज, दावत
खिसियाना क्रि.(हिं.) = नाराज होना
अंजर-पंजर पुं.सं.(सं.) = ढाँचे के जोड़

मुहावरे

ताव आना = क्रोध आना ।
उड़न छू हो जाना = भाग जाना ।
उड़ जाना = गायब होना ।

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

१. पार्वती अम्मा के लिए मूल्यवान चीजें

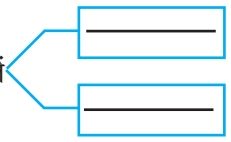

२. पानी में ये बहे जा रहे थे

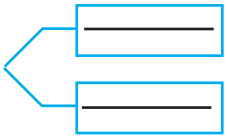

(२) रामबोला ने सहायता के लिए इन्हें पुकारा

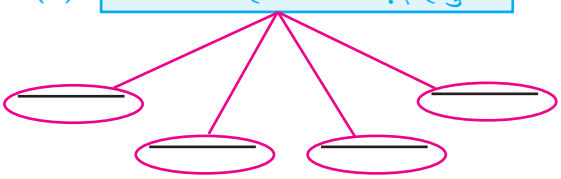

(३) उदासीनता की अवस्था में रामबोला को दिखाई दिया :

१. ----------

२. ----------

३. ----------

४. ----------

(४) झोंपड़ी के पुनर्निर्माण के लिए बटोरी गई सामग्री

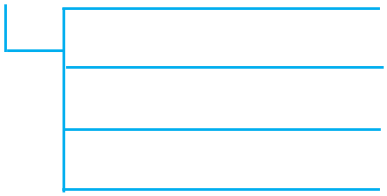

(५) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

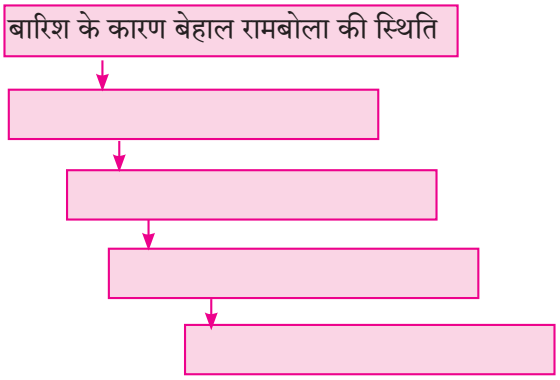

(६) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों ।

प्रलय, श्रम की साधना, खपच्चियाँ, बाँस का टुकड़ा

(७) पाठ में आए इन शब्दों के विलोमार्थक शब्द ढूँढ़कर लिखिए :

निर्जीव	×	———	असंतोष	×	———
जय	×	———	टेढ़ा-मेढ़ा	×	———
सफल	×	———	अंत	×	———
आशा	×	———	सूखा	×	———

(८) सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

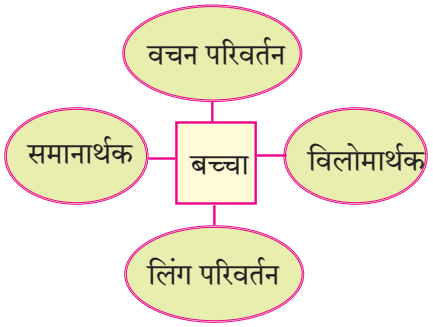

अभिव्यक्ति

'विरोधी स्थितियों में मेहनत ही हमारी सहायक बनती है', विषय पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर प्रयुक्त कारकों को अधोरेखांकित करके उनकी भेद सहित सूची बनाइए :

बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए । जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गईं, बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी थीं । मगर दोनों पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए और सिर दायें से बायें और बायें से दायें झूल रहा था । मुँह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाजें आ रही थीं । जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते और फिर जब झटके से नींद टूटती तो सिर फिर दायें से बायें झूलने लगता । पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और माँ के झरे हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे । देखते ही शामनाथ क्रुद्ध हो उठे । जी चाहा कि माँ को धक्का देकर उठा दें और उन्हें कोठरी में धकेल दें, मगर ऐसा करना संभव न था, चीफ और बाकी मेहमान पास खड़े थे ।

माँ को देखते ही देशी अफसरों की कुछ स्त्रियाँ हँस दीं कि इतने में चीफ ने धीरे-से-कहा-'अरे ! पूअर डियर !'

कारक	भेद	कारक	भेद
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------

(२) निम्नलिखित वाक्यों में कोष्ठक में से उचित कारक का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

१. आसमान --- काले दूधिया बादलों में खामोश घमासान मचा हुआ था । (की, में, से)

.....

२. वो फुटपाथ --- लगी रेलिंग पर पीठ टिकाकर खड़ी हो गई । (ने, को, से)

.....

३. वह झुँझलाते हुए ऑटो --- सड़क के किनारे तक खींच लाया । (के लिए, की, को)

.....

४. बच्चों के नाम पर बूढ़े --- एक बार नजर उठाकर जरूर देखा । (में, ने, से)

.....

५. --- भई ! शास्त्री नगर में हूँ । (हाँ, अरे, जी)

.....

६. उसने जल्दी --- डोंगे का ढक्कन हटाया । (की, पर, से)

.....

७. वह लगभग पैरों --- घसीट रही थी । (में, से, को)

.....

उपयोजित लेखन

'संगणक की आत्मकथा' इस विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

7I5H4T